Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

# रीतिकाल के महाकवि भूषण जीवन परिचय

**रुचि सिंगला***

सहायक प्रोफेसर, आरकेएसडी शिक्षा महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा -136027

***सार - महाकवि भूषण रीतिकाल के तीन प्रमुख हिन्दी कवियों में से एक हैं, वीर रस में प्रमुखता से रचना कर भूषण ने अपने को सबसे अलग साबित किया। 'भूषण' की उपाधि उन्हें चित्रकूट के राजा रूद्रसाह के पुत्र हृदयराम ने प्रदान की थी। ये मोरंग, कुमायूँ, श्रीनगर, जयपुर, जोधपुर, रीवाँ, छत्रपती शिवाजी महाराज और छत्रसाल आदि के आश्रय में रहे, परन्तु इनके पसंदीदा नरेश छत्रपति शिवाजी महाराज और महाराजा छत्रसाल थे। इस लेख में भूषण जी की भाषा, शैली और व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया है।***

***कीवर्ड - महाकवि, भूषण, रीतिकाल, महाराजा छत्रसाल***

---------------------------------X---------------------------------

**परिचय**

हिन्दी साहित्य के कवियों में महाकवि भूषण का विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने काव्य में प्रवृत्तियों के विरुद्ध वीरता और वीरता का गान किया है। दरबारी संस्कृति से जुड़े कर्मकांड कवियों की प्रकृति श्रृंगार के वर्णन में सबसे अधिक वाक्पटु है , जिसके अंतर्गत नायक-नायिका भेद , रति-रंग, स्त्री रूप-सुंदरता , नाखून-शिख, बरहमासा आदि का वर्णन मिलता है। भूषण ने अपने समय की इसी काव्य प्रवृत्ति के विरुद्ध वीर रस की कविता की रचना की है। उनकी दृष्टि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित है; जहां पूरी भारतीय जनता एक अत्याचारी और क्रूर शासक से पीड़ित है। इसलिए औरंगजेब के खिलाफ दिल्ली के शासक भूषण शिवाजी जैसे वीर नायक का चरित्र गाते हैं और उन्हें हिंदू जाति का अजेय योद्धा बताते हैं। लोकनायक और राष्ट्रवाद की भावना युग की आवश्यकता थी। भूषण ने छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल बुंदेला का महिमामंडन करके इस कार्य को पूरा किया। इसके अलावा कर्मकांड के वातावरण में अपनी रचना के माध्यम से हिंदी साहित्य के वीर काल में प्रचलित वीर प्रशस्ति कविताओं की परंपरा को पुनर्जीवित करने का श्रेय भी भूषण को ही जाता है।

**भाषा**

भूषण की भाषा भी बृजभाषा थी। कोमलकांत पदावली द्वारा बृजभाषा में वीर रस का वर्णन भी भूषण की अद्वितीय काव्य प्रतिभा का प्रतीक है।

उनकी भावानुगमिनी भाषा वीर भावों को धारण करने में पूर्णतः सक्षम है। अरबी , फारसी, खारी बोली, बुंदेलखंडी, प्राकृत, अपभ्रंश शब्दों का भी भाषा में पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया गया है।

भावों की गति और प्रवाह के अनुसार भाषा की तीव्रता प्रवाह और वेग है। भूषण शब्द चित्र प्रस्तुत करने में काफी सफल रहे हैं।

आवश्यकतानुसार शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा भी है। एक उदाहरण देखिये -

**ऐल फैल खेल भैल खनक में गैल गैल, गजन की टेल पैल सैल उसलत हैं।**

**शैली**

भूषण की शैली रीतिकालीन शैली है। इनकी शैली का शरीर रीति-कालीन अवश्य है परन्तु आत्मा में राष्ट्र की पुकार और युग-वाणी है।

शैली ओजपूर्ण और प्रभावपूर्ण है। व्यंजकता, ध्वन्यात्मकता एवम् चित्रमयता इनकी शैली की प्रमुख विशेषतायें हैं।

भूषण की शैली सरल, सजीव एवम् प्रभावोत्पादक है।

**रस, छंद एवं अलंकार**

भूषण वीर रस के अद्वितीय कवि हैं। वीर-रस का सर्वाङ्गपूर्ण सफल परिपाक जैसा इनके काव्य में हुआ वैसा अन्यत्र नहीं हुआ।

चरित्र नायक शिवाजी की युद्ध वीरता के साथ-साथ उनकी दानवीरता, दयावीरता और धर्मवीरता का भी चरित्रांकन किया गया है।

भयानक एवम् रौद्र रसों का भी परिपाक इनकी रचनाओं में सुन्दर शैली में हुआ है।

छंद-योजना में भूषण ने कवित्त, दोहा, रोला, छप्पय तथा हरिगीतिका आदि छंदों का प्रयोग किया है। भूषण की छन्द-व्यवस्था सुन्दर है। कवित्त इनके अधिक निकट थे।

**व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

भूषण का जन्म कानपुर जिले के घाटमपुर तहसील के त्रिविक्रमपुर गांव (टिकबनपुर) में हुआ था। साक्ष्यों के आधार पर इनका समय 1640 से 1735 ई. तक निर्धारित किया जा सकता है। उनका असली नाम भूषण है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने उन्हें 'कविभूषण' की उपाधि दी थी। तभी से वे भूषण के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका वास्तविक नाम क्या था, यह ज्ञात नहीं है।" श्री नारायण प्रसाद 'देताब' ने 'शिवराज भूषण' में कवि के परिचय के आधार पर भूषण का मूल नाम 'कन्नोज' दिया है - 'द्विज कन्नोज कुल कश्यपी' इसी प्रकार श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित ने भूषण का वास्तविक नाम इस प्रकार दिया है 'मणिराम', 'घनश्याम' के रूप में पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और 'ब्रज भूषण' के रूप में डॉ. किशोरीलाल गुप्ता। भूषण का वास्तविक नाम चाहे जो भी हो, किन्तु लोक में वे इसी नाम से जाने जाते थे -

> **“देसनि देसनि तें गुनी, आवत जाँचत ताहि।**
> **तिन आयो एक कवि, भूषण कहिए जाहि।।1**

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकला चिंतामणि और मतिराम के प्रसिद्ध कवियों को भूषण का भाई माना है। भूषण कश्यप गोत्री, कन्याकुब्ज, त्रिपाठी एक ब्राह्मण थे और उनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। रत्नाकर त्रिपाठी के चार पुत्र थे - चिंतामणि, भूषण, मतिराम और जटाशंकर। चिंतामणि और मतिराम रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि थे।

भूषण कई राजाओं के साथ रह चुके हैं। आश्रय की खोज के संबंध में यह कथा प्रसिद्ध है कि विवाह के समय भी भूषण घर में बैठकर ही भोजन करते थे और उनके बड़े भाई चिंतामणि शाहजहाँ के दरबार से कमाकर पूरे परिवार का पालन-पोषण करते थे। खाने में नमक कम होने पर एक दिन भूषण ने अपनी भाभी से नमक मांगा। इस पर भाभी ने ताना मारते हुए कहा कि मैं इतना नमक लाऊंगी जितना तुमने कमाया है। भूषण ने इसे महसूस किया और नमक (अर्थ) की तलाश में निकल पड़े। आश्रय की तलाश में सोलंकी पहले चित्रकूट के राजा रुद्रशाह के दरबार में गए और वहां से 'कविभूषण' की उपाधि प्राप्त कर आगरा होते हुए शिवाजी के दरबार में पहुंचे। श्री हरदयाल सिंह ने लिखा है कि “शिवाजी द्वारा सम्मानित होने पर यहीं से उन्होंने नमक के बदले एक लाख रुपये भाभी के पास भेजे थे।”

मिश्र बंधुओं ने शिवाजी के अतिरिक्त भूषण के बारह आश्रयदाताओं के नाम गिनाए हैं -

1) हृदयराम सुत रुह सुरकी महोबा निवासी (सन् 1666 ई.)

2) कुमाऊँ नरेश ज्ञानचंद (सन् 1700-1708 ई.)

3) गढ़वाल नरेश फतहशाह (सन् 1684-1716 ई.)

4) छत्रपति साहूजी भोंसला (सन् 1708-1748 ई.)

5) बाजीराव पेशवा (सन् 1713 1735 ई.)

6) महाराज अवधूत सिंह (सन् 1700-1755 ई.)

7) सवाई जयसिंह जयपुर नरेश (सन् 1708-1743 ई.)

8) चिंतामणि उर्फ चिमनाजी (1671-1732 ई.)

9) रावबुद्ध सिंह हाडा बूंदीनरेश (सन् 1707-1748 ई.)

10) दाराशाह (सन् 1653 ई. तक)

11) भगवंतराय बीची असोथर नरेश (सन् 1683-1735 ई.)

उपर्युक्त सारे आश्रयदाताओं के नाम भूषण के छंदों में प्राप्त विवरण के आधार पर दिए गए हैं , किन्तु इनसे संबंधित अधिकाँश छंद प्रसंगवश आए हैं। इन सभी को भूषण का आश्रयदाता मानना ठीक नहीं है। अत: भूषण के प्रमुख आश्रयदाताओं में तीन नाम प्रमुख हैं - छत्रपति शिवाजी, छत्रसाल बुन्देला और छत्रपति साहू महाराज।

भूषण वीररस के कवि थे , किन्तु सर्वप्रथम 1666 ई. में 'कविभूषण' की उपाधि उन्हें श्रृंगारपरक छंदों के आधार पर मिली थी। अत: प्रवृति के अनुकूल न पाकर श्रेष्ठ आश्रयदाता की खोज में वे अपने भाई चिंतामणि के पास आ पहुँचे। औरंगजेब के पचासवी वर्षगाँठ के अवसर पर ही भूषण ने 12 मई सन् 1666 को सर्वप्रथम छत्रपति शिवाजी को मुग़ल दरबार में प्रत्यक्ष देखा था। वहाँ घटित प्रसंगों से प्रभावित होकर भूषण छत्रपति शिवाजी के पीछे रायगढ़ चले गए। रायगढ़ में शिवाजी एवं भूषण की भेंट हुई, जहाँ पर उन्होंने शिवाजी को निम्नलिखित छंद सुनाया था -

**"इंद्रा जिमि जम्म पर, वादव सुलभ पर,**
**रावण संदभ पर, रघुकुलराज है।**
**पौन वारिवाह पर, संभु रतिनाह पर,**
**ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराह है**
**दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर,**
**भूषण वितुंड पर, जैसे मृगराज है।**
**तेज ताम अंस पर, कान्हा जिमि कंस पर**
**त्यौं म्लेच्छ वंस पर सेर सिवराज है।"2**

इसके बाद भूषण शिवाजी के दरबारी कवि हो गए। भूषण शिवाजी के साथ दरबार में ही नहीं , युद्धक्षेत्र में भी रहते थे। सन् 1670 ई. में भूषण ने पेड़गाँव के पास बहादुर खां को शिवाजी से हारते हुए और सन् 1672 ई. में सलहेरी के युद्ध में महावत खां को शिवाजी से हारकर संधि करते हुए अपनी आँखों से देखा था - 'भूषण देखे बहादुरखां पुनि होय महावतयां अति ऊबा। भूषण हिन्दू जाति के प्रति एक संवेदनशील, स्पष्टवादी, निर्भीक एवं स्वामिभक्त कवि थे। औरंगजेब के धार्मिक अत्याचार , एवं हिन्दू जनता की दुर्गति को देखकर उनका मन विद्रोह कर उठा था। इसी कारण वे एक श्रेष्ठ एवं आदर्श लोकनायक की खोज में आगरा से रायगढ़ गए और शिवाजी के आश्रय में रहकर उनके गौरवयुक्त चरित्र को अमरता प्रदान की।

## भूषण की रचनाएँ

सर जार्ज ग्रियर्सन और ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने भूषण के चार ग्रन्थ माने हैं -

- **शिवराज भूषण**

यह भूषण की एकमात्र उपलब्ध श्रेष्ठ रचना है। शैली की दृष्टि से यह अलंकार लक्षण ग्रन्थ है जिसमें विभिन्न अलंकारों का लक्षण दोहे में बताते हुए उदाहरण छप्पय , कवित्त, सवैया आदि छंदों में प्रस्तुत किया गया है। शिवराज भूषण का रचनाकाल भूषण ने स्वयं अपने ग्रन्थ में दिया है -

**"समत सत्रह से तीस पर सूचि बड़ी तेरसि भानु।**
**भूषण सिवभूखन कियो, पढ़ी सकल सुज्ञान।।3**

इस प्रकार प्रायः सभी विद्वानों ने 'शिवराज भूषण' का रचनाकाल इस दोहे के आधार पर संवत 1730 माना है।

शिवराज भूषण एक लक्षण ग्रन्थ है जिसमें 100 शब्दालंकार और 5 अर्थालंकारों के लक्षणों के साथ-साथ

कवित्त सवैया, छप्पय आदि छंदों में शिवाजी का चरित्र चित्रण, तत्कालीन इतिहास एवं शिवाजी संबद्ध प्रसंगों का प्रमाणिक वर्णन हुआ है।

"शिवराज भूषण' एक अलंकारिक ग्रंथ है। इसी पुस्तक के आधार पर भूषण की गणना डॉ. नागेंद्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य' में 'अलंकार-निरुपक रीति कवि' में की गई है। लेकिन हम देखते हैं कि इस पुस्तक में आभूषणों को मौलिक रूप से नहीं माना गया है। वास्तव में भूषण ने तो केवल कर्मकांडों का ही पालन किया है। भूषण का असली काम अलंकार की व्याख्या करना नहीं था , बल्कि शिवाजी के चरित्र को गाकर जनता में स्वाभिमान की भावना पैदा करना था। अलंकारों के निरूपण के संदर्भ में पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने 'भूषण ग्रंथावली' में कहा है कि- "शिवराज भूषण में अनुक्रम उदाहरण नहीं बने थे। कुछ तो वे पहले से ही बने थे। बाकी बनाए गए थे। पुस्तक की संरचना खड़ी हो गई। सहारा या अध्ययनानुशीलन सीधे तौर पर किसी अलंकृत पाठ से नहीं है। यही कारण है कि भूषण का चरित्र-चित्रण और चित्रण दोनों ही कई स्थानों पर अस्पष्ट और दोषपूर्ण हैं। 'शिवराज भूषण' में अलंकार का निरूपण भले ही त्रुटिपूर्ण रहा हो , किन्तु काव्य की दृष्टि से यह एक सफल रचना है। इस पुस्तक में छत्रपति शिवाजी के शौर्य , आतंक, युद्ध, दान, चतुराई आदि व्यक्तित्व गुणों का सजीव वर्णन किया गया है। यह एक वीर रस प्रधान ग्रंथ है , जिसमें विषय के अनुसार सर्वत्र वाक्पटु वाणी रखी गई है।

- **शिवाबावनी**

यह कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं है। मिश्रबंधुओं ने स्पष्ट रूप से कहा है कि - "यह कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं , भूषण के 52 छंदों का संग्रह मात्र है। इसका नामकरण एवं संकलन बंबई के श्री गोवर्धनदास लक्ष्मीदास ठक्कर ने किया है। पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है कि - "संवत 1946 से पूर्व शिवाबावनी का अस्तित्व ही नहीं था। 4 शिवाबावनी के 52 छंदों में भूषण ने शिवाजी के शौर्य, साहस, वैभव, युद्ध, दान, दया आदि का वर्णन किया है। इसके कतिपय छंदों में औरंगजेब को एक अत्याचारी शासक बताते हुए शिवाजी को उसकी तुलना में श्रेष्ठ बताया गया है। शत्रुओं के अत्याचार से हिंदुओं की रक्षा करने में शिवाजी की भूमिका आदि का वर्णन ओजस्वी शैली में हुआ है। शिवाबावनी की यह पंक्ति प्रसिद्ध है -

**"शिवाजी न होते तो सुनति होती सबकी।"**

- **छत्रसाल दशक**

यह बूंदी नरेश छत्रसाल की प्रशंसा में रचित 10 छंदों का संग्रह है। इसकी रचना कवित्त छंद में हुई है जिसमें प्रथम दो कवित्त में छत्रसाल का परिचय है तथा बाकी के आठ कवित्त में उसके पराक्रम , शौर्य एवं वीरता का सजीव वर्णन किया गया है। अत: इन छन्दों में वीर एवं रौद्र रसों की व्यंजना हुई है।

- **स्फुट छंद**

कवि भूषण के अधिकांश श्लोक पं. द्वारा संपादित 'भूषण ग्रंथावली ' पुस्तक में संकलित हैं। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र इसमें कुल 586 श्लोक हैं जिनमें 407 श्लोक 'शिवराज भूषण' के हैं। उन्होंने शेष 179 श्लोकों को प्रकीर्णन में रखा है। इन 179 श्लोकों में से 'शिवबावनी' और 'छत्रसाल दशक' के श्लोकों को भी हटा दिया गया है, तो शेष छंदों की संख्या भी काफी रहती है। हम उन्हें स्पॉट छंद के रूप में मान सकते हैं। इन टॉटी छंदों में छत्रपति शिवाजी से संबंधित श्लोकों की संख्या सर्वाधिक है। उसके बाद छत्रसाल बुन्देला विषयक छंद मिलते हैं। छत्रसाल बुन्देला की बीरता का वर्णन करते हुए भूषण कहते हैं -

**"बड़ी औड़ी उमड़ी नदी सी फौज छेकी,**
**जहाँ मेड़ बेड़ी छत्रसाल मेरु से खरे रहे।**
**चमति के चक्कवै मचायौ घमासान बैरी,**
**मलियै मसानि आनि सोहैं जे अरे रहे।**
**भूषन भनत भकरुंड रहेरुंडमुंड,**
**भबके भुसुंड तुड लोहू सों भरे रहें।**
**कीन्हों जसपाठ हर पठनेटे ठाट पर काठ लौं,**
**निहारे कोस साठ लौ डरे रहे॥"5**

इसके अलावा भूषण ने शत्रपति साहूजी , बाजीराव पेशवा, रेवान नरेश अवधूत सिंह, मिर्जा राजा जय सिंह और उनके पुत्र राम सिंह की स्तुति में श्लोक भी कहे हैं। भूषण के श्लोकों में औरंगजेब की निन्दा देखने को मिलती है। वह औरंगजेब का कट्टर विरोधी था , लेकिन उसका बड़ा भाई युवराज दारा का बहुत बड़ा प्रशंसक था।

श्रृंगार रस अनुष्ठानों में प्रमुख रहा है। स्थिति और परिवेश के अनुसार भूषण ने श्रृंगार के छंदों की भी रचना की है , जिनकी संख्या 39 है। इन छंदों में वसंत का वर्णन , मुग्ध नायिका के गुण, परकिया का प्रेम आदि मिलता है। बसंत का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं -

**'विषम बिडारिबे को बहत समीर मंद,**
**कोकिला की कूक कान कानन सुहाई है।**
**इतनो संदेसो है जू पथिक तिहारे हाथ,**
**कहो जाय कन्त सो बसंत रितु आई है।।6**

**उपसंहार**

इस प्रकार भूषण के श्लोकों के आधार पर कहा जा सकता है कि वे मूलतः वीर रस के कवि हैं। इन छंदों में भी उन्होंने शासकों के जीवन का वर्णन किया है। अनुष्ठान के अन्य कवि जहां अपने राजाओं या संरक्षकों की विलासिता को उनके मनोरंजन की वस्तु बताते हुए कविता लिखते थे, वहीं भूषण की रचना में राजाओं का संघर्ष दिखाई देता है। यह संघर्ष सिर्फ हमारे लिए नहीं है , बल्कि पूरी हिंदू जाति के लिए है। युद्ध और वीरता का वर्णन करते हुए भूषण ने वीर रस की कविता से साहित्य को समृद्ध किया, जो अपने समय में पीछे छूट गया था। उनकी कविता के अधिकांश प्रसंग ऐतिहासिक हैं। इन प्रसंगों में न केवल वीरता का भाव है, बल्कि जनभावना की अभिव्यक्ति भी है। अतः यह कहा जा सकता है कि भूषण ने अपने काव्य के माध्यम से शिवाजी और छत्रसाल जैसे वीर वीरों का गायन कर हिन्दू समाज को उसकी गौरवमयी परम्परा से परिचित कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

**संदर्भ**

1. राष्ट्र की उत्पत्ति और भारतीय राष्ट्रीयता - विपथगा, जनवरी 1962 पृ.25
2. शिवसिंह सरोज- ठाकुर शिवसिंह सेंगर तथा हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास
3. बृहत् विश्व सूक्ति कोश.
4. काव्य गौरव (पृष्ट ८७) (लेखक-राम दरश मिश्र
5. काव्य गौरव (पृष्ठ ८६) (सम्पादक-डॉ रामदरश मिश्र
6. मध्यप्रदेश (भूषण की राष्ट्रीय भावना, पृष्ठ १९१)

---

**Corresponding Author**

**रुचि सिंगला***

सहायक प्रोफेसर, आरकेएसडी शिक्षा महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा -136027

**ईमेल-** SINGLARUCHI009@GMAIL.COM